e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 12, Issue 9, September 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.423

9940 572 462 | 6381 907 438 | ijirset@gmail.com | www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 9, September 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1209008 |

प्रगतिवादी कवि नागार्जुन

डॉ0 अशोक कुमार शर्मा
सह आचार्य, हिन्दी
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
गंगापुर सिटी

प्रस्तावना

नागार्जुन हिन्दी साहित्य के मस्तमौला कवि रहें है। इनकी कविता छंद अलंकार से मुक्त होकर हृदय की गहिराईओं को छूती और इनकी बात करती महसूस होती है। नागार्जुन की कविता में सबसे अधिक प्रगतिवादी कविता की भावना दिखाई देती है। साहित्य में प्रगतिवादी आंदोलन स्वतंत्रता पूर्व चला, इसे उत्तर-छायावादी काल में विकसित हुआ माना जाता है। प्रगतिवाद कार्ल मार्क्स के सिद्धांत मार्क्सवाद से प्रभावित हुआ और उन्हीं विशेषताओं की ग्रहण कर साहित्यिक रूप में इसका विकास हुआ। प्रस्तुत वर्तमान शोध पत्र में प्रगतिवाद की प्रवृतियां जैसे कि शोषक वर्ग का विरोध, शोषित वर्ग की दीनता का चित्रण, यथार्थवादी चित्रण, साम्प्रदायिकता का विरोध इत्यादि विशेषताओं का अध्ययन किया गया है। निष्कर्षात्मक कथन दिया गया है कि प्रगतिवादी कविता और नागार्जुन आपस में इतने समाहित हैं कि नागार्जुन को प्रगतिवादी कवि न मानना भूल करने के समान है।

कुट शब्द- प्रगतिवाद, आन्दोलन, यर्थाथवादी, साम्प्रदायिक्ता, क्रान्ति, मार्क्सवाद, लोकहीत, आक्रोश, व्यंग।

जीवन- नागार्जुन का वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र है किन्तु यह 'बाबा' के नाम से अधिक लोकप्रिय है। नागार्जुन का जन्म सन् १९११ में तरौनी जिला, दरभंगा, बिहार में हआ। नागार्जुन की शिक्षा संस्कृत में प्रारंभ हुई। नागार्जुन ने धीरे-धीरे संस्कृत के अतिरिक्त हिन्दी, पाली और मैथिली में विदवता प्राप्त की। नागार्जुन घुमक्कड़ स्वभाव के विद्वान थे। इन्होनें यात्राओं के समय में काव्य रचना की। यात्रा के दौरान नागार्जुन का सम्पर्क राहुल सांस्कृत्यायन से हुआ। राहुल के प्रभाव से ही नागार्जुन ने बौद दर्शन और साम्यवाद का अध्ययन किया।

नागार्जुन अकसर ही अर्थाभाव से पीड़ित रहे क्योंकि इनकी उपजीविका का एकमात्र साधन लेखन ही था। इसी वजह से यह जीविका के लिए कभी कलकत्ता कभी काशी तो कभी दिल्ली और प्रयाग के चक्कर काटते रहे। नागार्जुन स्वभाव से सरल, हँसमुख एवं निरभिवानी व्यक्ति थे। उनके पहिचान के लोग उन्हे आदर एवं प्यार से बाबा कह कर बुलाते थे। लेखन के क्षेत्र में नागार्जुन का नाम न केवल कवि के रूप में प्रसिद्ध थे यद्यपि इन्होनें उपन्यासकार एवं अनुवादक के रूप में प्रसिद्ध थे। नागार्जुन का जीवन कठिनाईओं से भरा हुआ था। उनकी कविताओं में उनके ग्रामय जीवन की झलक दिखाई पड़ती है। वह अपने आर्थिक कष्टपूर्ण जीवन एवं परिवेश का वर्णन करते हुए कहते है-

आटा, दाल, नमक, लकड़ी के जुगाड़ में।

पत्नी और पुत्र में,

सेठ के हुकुम में।

कलम ही मेरा इल्म है, कुदाल है।

बहुत बुरा हाल है।

प्रगतिवाद अर्थ एवं स्वरूप- प्रगति संस्कृति भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है- आगे बढ़ना उन्नति करना अथवा ऐसा परिवर्तन लाना जो वस्तु, गुण जा परिणाम में वृद्धि कर सके। अंग्रेजी के शब्द प्रेग्रेस के वनज पर हिन्दी में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। प्रगतिशील ऐसे व्यक्ति को कहते है जो आगे बढ़ना चाहता है, आगे बढ़ता है। प्रगति करने में जिसकी आस्था होती है, जो आगे जाने के लिए प्रगतिशील है, जिसका आगे जाने के लिए प्रयत्नशील है। साहित्य के क्षेत्र में प्रगति शब्द जीवन से सम्बन्धित है इसलिए

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 9, September 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1209008 |

उसका विशिष्ट महत्व है प्रगतिवाद का अभिप्राय उस साहित्यक आन्दोलन अथवा बाद से है जिसमे मानव उसकी यथार्थ दिशा से अवगत कराने के साथ-साथ उसे प्रगति करने, उत्कर्ष की प्रेरणा दी जाती है। साहित्य में प्रगतिवादी आन्दोलन सुधारवादी न होकर यथार्थवादी था। इसका मुख्य उद्देश्य साहित्य में यथार्थवाद की स्थापना करना था। प्रगतिवाद विदेश के मार्क्सवादी से प्रभावित कहा जा सकता है साथ ही इसमें साम्यवादी दर्शन को भी अनुभव किया जा सकता है। लक्ष्मीसागर वाष्र्मेय ने प्रगतिवाद की परिभाषा देते हुए कहा है प्रगतिवाद सामाजिक यथार्थवाद के नाम पर चलाया गया वह साहित्यिक आन्दोलन है, जिसमें जीवन और यथार्थ के वस्तु सत्य को उत्तर छायावादी काल में प्रश्रय मिला और जिसने सर्वप्रथम यथार्थ की ओर समस्त साहित्यिक चेतना को अग्रसर होने की प्रेरणा दी।"

प्रगतिवाद की प्रवृतियां- प्रगतिवादी कविता की मुख्य प्रवृतियां एवं विशेषताएं इस प्रकार है-

१. प्रगतिवाद में लोकलित की कामना की जाती है।
२. प्रगतिवादी मन में शेषक वर्ग के प्रति क्रोध, आक्रोश की भावना है।
३. प्रगतिवादी कविता शोषित वर्ग की दीनता का चित्रण करती है।
४. प्रगतिवाद में धर्म और ईश्वर को कोई स्थान नहीं दिया गया।
५. प्रगतिवाद क्रांति की भावना रखता है।
६. प्रगतिवादी कविता में समाजिक यथार्थ का चित्रण होता है।
७. प्रगतिवाद साम्प्रदायक्ति का विरोध करता है।
८. प्रगतिवादी कवि प्रकृति को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करता है।
९. प्रगतिवाद मार्क्सवाद से प्रभावित है और उसका समर्थन करता है।
१०. प्रगतिवादी कविता अच्छे भविष्य में आस्था रखती है।
११. प्रगतिवादी कविता में समाजिक बुराईयों के प्रति व्यंग्य भावना दिखाई पड़ती है।

प्रगतिवाद की प्रवृतियाँ और नागार्जुन का काव्य

शोषक वर्ग के प्रति आक्रोश- प्रगतिवादी कविता ने समाज के शोषक वर्ग को शोषक, स्वार्थी, अन्यायी, निर्दय, कपटी माना है जो कि गरीबों का शोषण करते है। प्रयोगवादी कवि ऐसे शोषक वर्ग के प्रति आक्रोश व्यक्त है। नागार्जुन शोषक वर्ग पर कटाक्ष करते है उनका विरोध करते है। नागार्जुन ने पूजीपतिओं, जमींदारों, मिलमालकों एवं स्वार्थी राजनितिज्ञों को शोषक वर्ग माना है। वह अपनी कविता '२६ जनवरी, १५ अगस्त' में लिखते है-

सेठ है, शोषक हैं, नामी गला काट है,

गालियाँ भी सुनता है, भारी थूक चाट् है,

चोर है, डाकू है, झूठा मक्कार है।

कातिल है, छलिया है, लुचा लावार है।

शोषितों की दीनता का चित्रण- प्रगतिवादी कविता शोषण वर्ग के हाथों शोषित वर्ग की लूट-खसूट का वर्णन करता है। शोषित वर्ग में मजदूर किसान छोटे आदमी है जो कि समाज की अन्याय रूपी चक्की में पिसता रहता है। नागार्जुन शोषित वर्ग की करूणा का वर्णन करते हुए हरिजन गाथा, में लिखते है।

ऐसा तो कभी नहीं हुआ था कि

एक नहीं, दो नही तीन नहीं

तेरह अभागे अकिंचन

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 9, September 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1209008 |

मनुपुत्र जिंदा झोंक दिए गए हों

प्रचंड अग्नि की विकराल लपटों में

साधन-सम्पन्न ऊँची ऊँची जातियों वाले

सौ-सौ मनुपुत्रों द्वारा ऐसा तो कभी नहीं हुआ था......

लोकहित की धारणा- प्रगतिवादी काव्य कला का प्रयोजन सर्वजन की हित साधना मानते हैं। प्रगतिवादी कविता मनोरजन का उद्देश्य नहीं लेकर चलती बल्कि यह समाज की भलाई का प्रयोजन रखती है। नागार्जुन के काव्य में लोकहित की भावना दिखाई पड़ती है। नागार्जुन 'नया साहित्य' में लिखते है।

मैं न अकेला कोटि-कोटि हैं मुझ जैसे तो,

सब को ही अपना-अपना दुख है वैसे तो,

पर दुनिया को नरक नही रहने देगें हम,

कर परास्त छलियों को, अमृत छीनेंगे हम।

क्रांति की भावना- प्रगतिवादी कवि शोषण और अन्याय की परम्परा को समाप्त करने के लिए हिंसात्मक क्रांति का आहवान करता है। नागार्जुन क्रांति की भावना का प्रसार करते है। काश क्रांति उतनी आसानी से हुआ करती कविता में नागार्जुन स्पष्ट करते है-

काश क्रांतियां उतनी आसानी से हुआ करती।

काश, क्रांतियां उतनी सरलता से संपादित हो जाती।

काश, क्रांतिया योगी, ज्योतिषी या जादूगर के चमत्कार हुआ करती।

धर्म और ईश्वर के प्रति अनास्था- प्रगतिवादी काव्य में धर्म और ईश्वर को कोई महत्व नही दिया गया। इसी तरह की दृष्टि नागार्जुन की है। नागार्जुन ईश्वर, भाग्य, धर्म, पूर्व जन्म के कर्म, स्वर्ग-नरक की धारणा को शोषिक वर्ग के हथियार माना है। नागार्जुन 'कल्पना के पुत्र हे भगवान' कविता में लिखते हैं-

घोर अपराधी सदृश हो जनवदन निर्वाक

बाप दादों की तरह रगहूँ न मैं निज नाक

मन्दिरों की दहेली पर पकड़ दोनो कान,

हे हमारी कल्पना के पुत्र, हे भगवान ।

साम्प्रदायिक्ता का विरोध- प्रगतिवादी कविता समाज के लिए हानिकारक साम्प्रदायिकता को जड़ को उखाड़ने के लिए प्रतिबद्ध है। इन्होंने साम्प्रदायिकता के स्कीर्ण विचारों का विरोध किया है। नागार्जुन ने "युगधारा' कविता से लिखा है-

हां बापू। मैं निष्ठापूर्वक आज शपथ लेता हूँ, सम्प्रदायवादी दैत्यों के विकट खोह जब तक खण्डर न बनेगे, तब तक मैं इनके खिलाफ लिखता रहूँगा।

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 9, September 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1209008 |

समाजवादी यथार्थ- प्रगतिवादी कवि समाजवादी यथार्थ को प्रस्तुत करते हैं। यही यथार्थ है जो कि संघर्ष में प्रेरणापद और मानवहितकारी बन प्रगतिवादी कविता में साम्य आया है। नागार्जुन भविष्य की चिंता न कर यथार्थ में रहने का आहवाहन करते हुए 'युगधारा' में लिखते है-

हम को क्या भय, तुम को क्या भय

मुटठी भर ही होगें वे, जिनका भविष्य है अन्धारमय

मार्क्सवाद का समर्थन- प्रगतिवादी कविता द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की साहित्यिक अभिव्यक्ति के साथ काल मार्क्स की स्तुति और 'वाद' की प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में व्यंजना किया करते है। नागार्जुन ने मार्क्सवाद का समर्थन करते हुए 'लाल भवानी' कविता में लिखा है-

होशियार, कुछ देर नही है लाल सवेश आने में,

लाल भवानी प्रकट हुई है सुना है तैलंगाने में।

प्रकृति का यथार्थ चित्रण- प्रगतिवादी कवियों ने प्रकृति चित्रण में विशेष रूचि ली है। नागार्जुन के काव्य में ग्रामों, प्रकृति का यथार्थ एवं मर्मस्पर्सी चित्रण किया है। युगधारा में नागार्जुन का प्रकृति चित्रण दृष्टिकोचर होता है-

'अमल, धवल गिरि के शिखरों पर बादल को घिरते देखा है।

व्यंग्य भावना- प्रगतिवादी कविता भ्रष्टाचार, राजनीति पार्टीओं पर करारा व्यंग्य करते हुए दिखाई देती है। प्रगतिवादी कविओं ने समाज के शोषिक वर्ग को आड़े हाथों लिया है। नागार्जुन राजनीतिक पार्टीओं पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं-

भैया। लंदन ही पंसद है आजादी सीता को,

नेहरू जी अब उमर गुजारें अंग्रेजी के खेलों में,

खादी ने मखमल से अपनी सांठ कर डाली है।

बिरला, टाटा, डालमियां की तीसों दीवाली है।

भविष्योन्मुखी आस्था और विश्वास- नागार्जुन ने सुनहरे भविष्य के प्रति दृढ आत्मविश्वास और आस्था प्रकट की है। वे जीवन की वर्तमान असंगतियों के निवारण में निरंतर निरत देखें जाते है। नवयुग का आरम्भ' कविता में नागार्जुन लिखते है-

बढ़े सहयोग भेद मिट जाए, मिटे शोषण का नाम निशान,

ढहे अन्यायों की दीवार, सुखी होवों मजदूर किसान।

उपसंहार- नागार्जुन यथार्थवादी प्रगतिवादी कवि है। नागार्जुन की कविताओं जैसे कि हरिजन गाथा और छोटी मछली बड़ी मछली कविताओं में उनका प्रगतिवादी रूप प्रखर रूप से सामने आया है। इनकी कविताएं हिन्दी साहित्य का मूल्यवान खजाना है। नागार्जुन की कविताओं में मनुष्य के शोषण के सभी रूपों सामराज्यवाद, सामंतवाद, पूंजीवादी के विरूद्ध तीव्र रोष का जो भाव दिखाई देता है, वह प्रगतिवादी काव्यधारी से उनके अभेद्य सम्बधं का प्रमाण है। नागार्जुन के प्रगतिवादी रूप को देखते हुए विश्वम्भर मानव ने अपनी पुस्तक 'नयी कविता नये कवि' में लिखा है- "साम्यवाद की मान्यताओं के अनुकूल अपनी दृष्टि जीवन दृष्टि बनाकर काव्य में प्रगतिवाद की पुष्टि करने में नागार्जुन अग्रणी है।"

नागार्जुन ने शोषक वर्ग की प्रखर आलोचना की है और शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार दर्शाया है। नागार्जुन साम्प्रदायिकता का विरोध करते है और किसानों मजदूरों के समर्थक मार्क्सवाद का समर्थन करते हैं। नागार्जुन की कविता कहीं

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 9, September 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1209008 |

लोकहित की धारणा समाहित किए हुए है तो कही इन्हीं लोकहितों की रक्षा के लिए क्रांति का आहवान करती हुई भी दिखाई पड़ती है। इस प्रकार अंततः यही कहा जा सकता है। कि इनकी कविता में प्रगतिवाद की विशेषताओं की बहुलता को हुए अगर इन्हें प्रगतिवाद का स्तंभ भी कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

संदर्भ

१. रॉय, ल. (१९८९). हिन्दी की प्रगतिशील कविता. चण्डीगढ़, हरियाणा साहित्य अकादमी.
२. शोमाकान्त (२००३). नागार्जुन रचनावली: खण्ड ३. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन,
३. शर्मा, शिव कुमार, हिन्दी साहित्य युग और प्रवृतियाँ, नई दिल्ली, अशोक प्रकाशन,
४. शोमाकान्त(2003) नागार्जुन रचनावली खण्ड 1, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
५. मनु शर्मा (2001) नागार्जुन एक अध्ययन नई दिल्ली, अषोक प्रकाशन
६. अज्ञेय - तार सप्तक (तीसरा) नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

INNO SPACE

SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor: 8.423

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com